IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनों में बिहार के किसान

सुधीर कुमार[1] एवं डॉ0 अनामिका[2]

[1]शोध–छात्र, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

[2]सहायक प्राध्यापिका, इतिहास विभाग, डॉ. राममनोहर लोहिया स्मारक महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

शोध–सार – भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम (1857–1947) ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ भारतीयों द्वारा किया गया एक व्यापक, विविध और दीर्घकालिक संघर्ष था। इस आंदोलन में देश के विभिन्न वर्गों ने अपनी भूमिका निभाई, लेकिन विशेष रूप से ग्रामीण भारत के किसानों की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण रही। बिहार राज्य के किसानों ने इस राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और अपने संघर्ष को स्वतंत्रता की इस व्यापक लड़ाई से जोड़ दिया। इसमें सामाजिक–आर्थिक कारणों, प्रमुख आंदोलनों, विशेष रूप से 1917 के चंपारण सत्याग्रह, स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में किसानों की सक्रियता और बिहार प्रांतीय किसान सभा की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसके साथ ही, बिहार के योगदान को बाद के राष्ट्रीय आंदोलनों, जैसे कि भारत छोड़ो आंदोलन, में भी देखा गया है। उपनिवेशी शासन के तहत बिहार की कृषि संरचना और इसके प्रभाव को भी किसान भागीदारी पर विश्लेषित किया गया है। ऐतिहासिक साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि बिहार के किसान आंदोलनों ने न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दिशा और विधियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार बिहार के किसान अपनी सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हुए, राष्ट्रीयता की भावना के साथ अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष में शामिल हुए। उनके इस संघर्ष ने न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी स्वतंत्रता की भावना को प्रबल किया।

मुख्य शब्द – भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन, ब्रिटिश साम्राज्य, किसान, चंपारण सत्याग्रह, कृषि संरचना, स्वामी सहजानंद सरस्वती, सामाजिक आर्थिक चुनौति।

1. प्रस्तावना –

भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम (1857–1947) ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ भारतीयों द्वारा किया गया एक व्यापक, विविध और दीर्घकालिक संघर्ष था। इस आंदोलन में देश के विभिन्न वर्गों ने अपनी भूमिका निभाई, लेकिन विशेष रूप से ग्रामीण भारत के किसानों की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण रही। बिहार राज्य के किसानों ने इस राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और अपने संघर्ष को स्वतंत्रता की इस व्यापक लड़ाई से जोड़ दिया। बिहार के किसान केवल उपनिवेशी शोषण के शिकार नहीं थे; वे सक्रिय रूप से संगठित हुए, विरोध प्रदर्शन किए, और ब्रिटिश शासन के खिलाफ व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन में विचारधारा और रणनीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार बिहार के किसान अपनी सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हुए राष्ट्रीयता की भावना के साथ अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष में शामिल हुए। उनके इस संघर्ष ने न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी स्वतंत्रता की भावना को प्रबल किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि किसान वर्ग ने स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः ब्रिटिश शासन और किसान

ब्रिटिश राज के दौरान बिहार में किसानों की स्थिति अत्यंत गंभीर और दयनीय थी। ब्रिटिश शासन ने भूमि राजस्व और वसूली के लिए कई नीतियाँ लागू कीं, जिनमें स्थायी व्यवस्था और जमींदारी प्रथा प्रमुख थीं। इन नीतियों के परिणामस्वरूप, अमीर जमींदारों को अत्यधिक शक्ति मिली, जिससे किसानों पर भारी करों का बोझ, अवैध वसूली और बलात्कारी कृषि प्रणाली थोप दी गई। विशेष रूप से, नील की खेती के लिए किसानों को टिंकटिया या पंचकठिया प्रणाली के माध्यम से अपनी भूमि के कुछ हिस्सों पर नील उगाने के लिए मजबूर किया गया। इस प्रक्रिया ने किसानों की आजीविका पर गहरा नकारात्मक प्रभाव डाला, क्योंकि उन्हें अपनी पारंपरिक फसलों को छोड़कर नील की खेती करने के लिए बाध्य होना पड़ा, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और भी बिगड़ गई।

किसानों की नील की खेती से संबंधित शोषणकारी नियमों के कारण उन्हें बहुत ही कम मुआवजा मिलता था, जिससे वे ऋण और कर्ज़ों के भारी बोझ तले दब जाते थे। अत्यधिक करों और अवैध लगानों के कारण किसान गंभीर आर्थिक संकट में फंस गए, जिससे उनका जीवन अत्यंत कठिन हो गया। इस प्रकार की दयनीय परिस्थितियों ने अंततः संघर्षों और आंदोलनों की नींव रखी, जो किसानों के अधिकारों और उनके जीवन स्तर में सुधार के लिए आवश्यक बन गई। इन समस्याओं ने न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित किया, बल्कि उनके सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता को भी बढ़ावा दिया, जिससे वे अपने हक के लिए संगठित होने लगे।

3. बिहार के पहले किसान संघर्ष और अशांत वातावरण

ब्रिटिश राज के दौरान बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों के बीच असंतोष की भावना धीरे–धीरे उभरने लगी थी। 1860 के दशक में, शेख गुलाब जैसे स्थानीय किसान नील किसानों के खिलाफ सक्रिय रूप से विरोध प्रदर्शन करने लगे थे। हालांकि ये संघर्ष प्रारंभिक चरण में छोटे थे, लेकिन इनसे किसानों के बीच एकजुटता और प्रतिरोध की भावना को बल मिला। यह असंतोष समय के साथ बढ़ता गया और 20वीं सदी के आरंभ में यह एक व्यापक आंदोलन का रूप लेने लगा, जिसने किसानों के अधिकारों और उनकी स्थिति को सुधारने के लिए संगठित प्रयासों की नींव रखी।

4. चंपारण सत्याग्रह (Champaran Satyagraha), 1917

चंपारण सत्याग्रह ने बिहार के इतिहास में आत्मनिर्भरता, एकता और राष्ट्रीयता का एक महत्वपूर्ण प्रतीक स्थापित किया। यह आंदोलन 1917 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में ब्रिटिश शासन के खिलाफ किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रारंभ किया गया था। इस सत्याग्रह के पीछे कई प्रमुख कारण थे, जिनमें से एक था किसानों पर थोपे गए टिंकटिया और पंचकठिया प्रणाली के तहत खेती। इस प्रणाली ने किसानों को अनिवार्य रूप से नील की खेती करने के लिए मजबूर किया, जिससे उनकी अन्य खाद्य फसलों की खेती करने की क्षमता में बाधा उत्पन्न हुई। इसके अलावा, नील की खेती से मिलने वाला भुगतान अत्यंत कम था, और किसानों को भारी करों और अवैध वसूली का सामना भी करना पड़ता था।

राज कुमार शुक्ला, जो एक प्रमुख किसान नेता थे, ने महात्मा गांधी को चंपारण के किसानों की कठिनाइयों और उनके संघर्षों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने गांधी जी को इस क्षेत्र में किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए सत्याग्रह का नेतृत्व करने के लिए प्रेरित किया। चंपारण में किसानों को नील की खेती के लिए अत्यधिक शोषण का सामना करना पड़ रहा था, और शुक्ला ने गांधी जी को इस अन्याय के खिलाफ खड़ा करने का प्रयास किया। उनकी मेहनत और दृढ़ता ने गांधी जी को इस आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया, जिससे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। इस प्रकार, राज कुमार शुक्ला ने न केवल

चंपारण के किसानों की आवाज उठाई, बल्कि उन्होंने गांधी जी के नेतृत्व में एक ऐतिहासिक सत्याग्रह की नींव भी रखी।

महात्मा गांधी ने चंपारण आंदोलन का नेतृत्व करते हुए किसानों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उन्होंने सत्याग्रह के सिद्धांतों का उपयोग करते हुए किसानों को एकजुट किया और उनके साथ संवाद स्थापित किया। गांधी जी ने न केवल किसानों की समस्याओं को समझा, बल्कि उनके साथ मिलकर ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रतिरोध का रास्ता भी चुना। उनकी प्रेरणा से एक जांच समिति का गठन किया गया, जिसने किसानों की कठिनाइयों और उनके जीवन की विषम परिस्थितियों पर एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिससे उनकी आवाज को और अधिक मजबूती मिली।

चंपारण सत्याग्रह के परिणामस्वरूप टिंकटिया प्रणाली का अंत हुआ, जिससे किसानों को न केवल मानवीय बल्कि आर्थिक राहत भी मिली। इस आंदोलन ने किसानों के आत्म–विश्वास को एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया और सत्याग्रह को राष्ट्रीय आंदोलन के एक प्रमुख हथियार के रूप में स्थापित किया। यह संघर्ष केवल बिहार के किसानों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश में कृषि–आधारित आंदोलनों को एक नया दिशा और प्रेरणा प्रदान करने वाला साबित हुआ। चंपारण सत्याग्रह ने यह सिद्ध कर दिया कि संगठित प्रयास और दृढ़ संकल्प के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक अन्याय के खिलाफ सफलतापूर्वक लड़ा जा सकता है, जिससे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को भी एक नई ऊर्जा मिली।

5. किसान संगठनों का उदय और बिहार प्रांतीय किसान सभा

किसानों के संगठनों और आंदोलनों ने बाद के वर्षों में एक व्यापक रूप धारण किया। 1929 में स्वामी सहजानंद सरस्वती ने बिहार प्रांतीय किसान सभा (BPKS) की स्थापना की, जिसने किसानों की समस्याओं और उनके अधिकारों को स्पष्ट रूप से उजागर किया। इस सभा ने किसानों की आवाज़ को एक मंच प्रदान किया, जिससे उनकी मांगों को सुनने और समझने का अवसर मिला। समय के साथ, यह सभा ऑल इंडिया किसान सभा का हिस्सा बन गई, जिससे किसान आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान मिली और इसके प्रभाव में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

बिहार प्रांतीय किसान सभा के प्रमुख मुद्दों में अवैध करों और अतिरिक्त वसूली के खिलाफ विरोध, ज़मीन के मालिकों और जमींदारों के अत्याचारों के खिलाफ आंदोलन, बक़ास्त जमीनों के अधिकार की रक्षा तथा अवैध निकासी के खिलाफ संघर्ष शामिल थे। इसके अलावा, ज़मीन सुधार और किराया व्यवस्था का पारदर्शी और न्यायसंगत विभाजन भी इस सभा के महत्वपूर्ण विषयों में से एक था। इन आंदोलनों के दौरान, किसानों ने पटना, गया और दरभंगा जैसे प्रमुख स्थानों पर बड़े पैमाने पर रैलियाँ, सम्मेलन और सत्याग्रह आयोजित किए, जिससे उनकी आवाज़ को मजबूती मिली और उनकी मांगों को व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ।

बिहार के किसानों ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिए कई छोटे और बड़े सत्याग्रहों का आयोजन किया। इनमें से एक प्रमुख सत्याग्रह रियोरा सत्याग्रह था, जिसका नेतृत्व यदुनंदन शर्मा ने किया। यदुनंदन शर्मा ने स्थानीय प्रशासन के साथ भूमि विवादों के समाधान के लिए संघर्ष किया और इस प्रक्रिया में उन्होंने उल्लेखनीय सफलता हासिल की। उनके प्रयासों ने किसानों की भूमि को स्वतंत्र कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिससे न केवल किसानों का हौसला बढ़ा, बल्कि उनके अधिकारों की रक्षा के लिए एक मजबूत आधार भी तैयार हुआ। इस सत्याग्रह ने बिहार के किसानों के बीच एकजुटता और संघर्ष की भावना को भी प्रोत्साहित किया।

6. राष्ट्रीय आंदोलनों में किसान भागीदारी

6.1 असहयोग आंदोलन (Non-Cooperation Movement, 1920-22)

महात्मा गांधी द्वारा आरंभ किया गया असहयोग आंदोलन बिहार के किसानों के बीच एक गहरी राष्ट्रीय चेतना का संचार करने में सफल रहा। इस आंदोलन के तहत, बिहार के किसानों ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने का निर्णय लिया, जिससे उन्होंने अपने देश की आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया। इसके साथ ही, उन्होंने सरकारी स्कूलों और अदालतों का बहिष्कार किया, जो कि ब्रिटिश शासन के प्रति उनकी असहमति और विरोध का प्रतीक था। इसके परिणामस्वरूप, स्थानीय स्वराज संस्थाओं का समर्थन भी बढ़ा, जिससे किसान समुदाय में राष्ट्रीय विचारों का प्रसार हुआ। इस प्रकार, असहयोग आंदोलन ने न केवल बिहार के किसानों को एकजुट किया, बल्कि उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदार बनने के लिए भी प्रेरित किया।

6.2 सविनय अवज्ञा आंदोलन (Civil Disobedience Movement, 1930-34)

किसानों ने इस अवधि में नमक कानूनों का उल्लंघन करते हुए, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया और ब्रिटिश शासन की कार्यशैली के खिलाफ शांतिपूर्ण तरीके से विरोध प्रदर्शन किया। यह आंदोलन केवल एक राजनीतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि किसानों ने अपने आर्थिक और सामाजिक मुद्दों को भी राष्ट्रीय आंदोलन के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया। किसान संगठनों ने एकजुट होकर यह सुनिश्चित किया कि उनकी आवाज़ें सुनी जाएं और उनके अधिकारों की रक्षा की जाए। इस प्रकार, उन्होंने न केवल अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी, बल्कि देश की स्वतंत्रता के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

6.3 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' (Quit India Movement)

1942 में महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' की शुरुआत की, जिसका बिहार के किसानों और ग्रामीण समुदाय पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस आंदोलन में भाग लेने के लिए बिहार के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे गणेश पुरी, दरभंगा, गया और पटना, के लोगों ने बड़े पैमाने पर सक्रियता दिखाई। उन्होंने ब्रिटिश शासन के प्रतीकों पर हमले किए, रेल मार्गों पर विरोध प्रदर्शन किए और स्थानीय प्रशासन के खिलाफ उग्र गतिविधियों को अंजाम दिया। यह स्पष्ट था कि बिहार के किसान केवल कांग्रेस के निर्देशों का पालन नहीं कर रहे थे, बल्कि वे अपने आर्थिक और राजनीतिक शोषण के खिलाफ भी एकजुट होकर संघर्ष कर रहे थे। इस प्रकार, बिहार ने स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो न केवल राजनीतिक जागरूकता का प्रतीक था, बल्कि सामाजिक न्याय की मांग का भी एक महत्वपूर्ण चरण था।

7. सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव

7.1 किसान चेतना और राष्ट्रीयता

बिहार के किसानों ने अपने भूमि अधिकारों और कर सुधारों के लिए एकजुट होकर संघर्ष किया, जिससे राष्ट्रीयता की भावना को और भी मजबूती मिली। उन्होंने यह समझा कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक सत्ता के अधिग्रहण से नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की प्राप्ति से भी संबंधित है। इस संघर्ष के दौरान, किसानों ने न केवल अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयास किया, बल्कि समाज में समानता और न्याय की स्थापना के लिए भी आवाज उठाई। यह आंदोलन न केवल उनके अधिकारों की रक्षा के लिए था, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक परिवर्तन की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसने उन्हें एकजुट होकर अपने हक के लिए लड़ने की प्रेरणा दी।

7.2 जमींदारी प्रथा और भूमि सुधार

इन आंदोलनों ने जमींदारी प्रथा के खिलाफ सवाल उठाने का कार्य किया और भूमि सुधारों की आवश्यकता को मजबूती प्रदान की। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, भारत में भूमि सुधारों के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए, जो इन किसान संघर्षों की पृष्ठभूमि पर आधारित थे। इन संघर्षों ने न केवल किसानों की समस्याओं को उजागर किया, बल्कि यह भी स्पष्ट किया कि जमींदारी व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है।

7.3 किसान नेताओं की भूमिका

बिहार के किसान नेताओं, जैसे स्वामी सहजानंद सरस्वती, यदुनंदन शर्मा और राज कुमार शुक्ला ने किसानों के संघर्ष को एक नई पहचान दी, जिससे यह आंदोलन राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण बन गया। इन नेताओं ने न केवल किसानों के अधिकारों के लिए आवाज उठाई, बल्कि उनके संघर्ष को एक संगठित रूप भी प्रदान किया। इसके साथ ही, बिहार के अन्य प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं, जैसे डॉ. राजेंद्र प्रसाद और अनुग्रह नारायण सिन्हा ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल नेतृत्व प्रदान किया, बल्कि इस आंदोलन को एक स्पष्ट दिशा भी दी, जिससे बिहार के किसानों की समस्याओं को राष्ट्रीय मंच पर लाने में मदद मिली।

8. निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में बिहार के किसानों की भूमिका न केवल अत्यंत महत्वपूर्ण थी, बल्कि यह आंदोलन का एक अभिन्न हिस्सा भी बन गई थी। किसानों ने अपने स्थानीय मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर उठाते हुए स्वतंत्रता के लिए एक संगठित और शांतिपूर्ण संघर्ष का मार्ग प्रशस्त किया। चंपारण सत्याग्रह ने सत्याग्रह की विधि को एक व्यापक राष्ट्रीय पहचान दी, जिससे किसानों के संगठनों ने कृषि और भूमि सुधार के लिए आवश्यक दिशा–निर्देश स्थापित किए। इसके अलावा, 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान किसानों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपने विद्रोह को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया, जिससे यह सिद्ध होता है कि वे स्वतंत्रता की लड़ाई में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरे।

यह स्पष्ट है कि बिहार के किसानों ने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई, बल्कि उन्होंने इस संघर्ष के स्वरूप को भी आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उनके योगदान ने न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी एक नई चेतना का संचार किया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम की दिशा और गति को प्रभावित किया गया। आज भी, बिहार के किसानों की यह भागीदारी भारतीय कृषि इतिहास और राष्ट्रीय आंदोलन के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में जानी जाती है। उनके संघर्ष और समर्पण ने न केवल उनके अपने अधिकारों के लिए बल्कि समग्र देश की स्वतंत्रता के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

संदर्भ सूची (Reference) :–

[1] एच.एन. विल्सन : 'हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया', एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, 1946

[2] थाम्पसन, ए. एवं गैरेट (1969) जी. टी. राइज एण्ड फुलफिलमेण्ट ऑफ ब्रिटिश रूल इन इण्डिया, इलाहाबाद।

[3] ताराचंद : 'भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास' (प्रथम खण्ड)– प्रकाशन विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली, 1979

[4] अग्निहोत्री, वी.के., 'भारतीय इतिहास', एलाइड पब्लिशर्स प्रा. लि. नई दिल्ली।

[5] जायसवाल, काशीप्रसाद, 'हिन्दू पालिटी : बंगलोर सिटी', दि बंगलोर प्रिंटिग एंड पब्लिशिंग कं. लि. 1943

[6] बिड़ला घनध्यामदास, 'इन दि शैडी ऑफ दि महात्मा, (हिन्दी अनुवाद), सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

[7] एल.सी.ए. नावेल्स : इकनामिक डेवलपमेंट ऑफ दि ओवरसीज एंपायर', विद्यामंदिर प्रकाशन, मुरार, ग्वालियर, 1978

[8] डाडवैल, एच.एच. (सम्पा.), ''कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया', भाग–3, कैम्बिज 1932

[9] Champaran Satyagraha, *Wikipedia*.

[10] Champaran Satyagraha: Causes and Significance (Jagran Josh).

[11] Champaran Agrarian reforms and farmer resistance, GKToday.

[12] Bihar peasant movements notes (BiharPSCNotes).

[13] Peasant Movement 1930-40 (UPSCwithNikhil).